International Journal of Applied Research 2019; 5(1): 397-399

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(1): 397-399
www.allresearchjournal.com
Received: 21-11-2018
Accepted: 24-12-2018

संजय साह
(इतिहास विभाग), ल0ना0मि0वि0, दरभंगा, बिहार, भारत।

Corresponding Author:
संजय साह
(इतिहास विभाग), ल0ना0मि0वि0, दरभंगा, बिहार, भारत।

मुगल साम्राज्य का पतनः एक विवेचना

संजय साह

सारांश
भारतवर्ष में मुगल साम्राज्य जितना समृद्ध हुआ उतना षायद ही कोई साम्राज्य फला–फूला होगा। यह साम्राज्य जितनी तेजी से उदित हुआ उतने ही बुरी तरीके से इसका पतन भी हुआ। मुगल साम्राज्य के पतन के अनगिनत कारण रहे लेकिन कुछ ऐसे कारण प्रमुख थे जिसने इस साम्राज्य की जड़ें तक हिला कर रख दी।

प्रस्तावना
यूं तो भारतवर्ष में आक्रमणकारियों और आततायियों की फहरिष्त बड़ी लम्बी है जिसमें षक, हुण, यूनानी, पुर्तगाली, मुगल आदि षामिल हैं। मुगलों ने जिन रणनीतियों के साथ भारत में अपने पैर जमाए वह काबिले तारीफ है। एक समय ऐसा भी आया जब सम्पूर्ण भारत में मुगल साम्राज्य की तूती बोलने लगी थी। बाबर (1526–30) ने सर्वप्रथम भारत में मुगल साम्राज्य की नींव रखी जिसे बाद में हुमायूँ (1530–1556), जलालुद्दीन अकबर (1556–1605), जहाँगीर (1605–27), षाहजहाँ (1627–58) ने और भी दृढता प्रदान की। लेकिन बाद में औरंगजेब (1658–1707) के षासनकाल में मुगल साम्राज्य की जड़ें खोखली होने लगीं। ऐसा बिल्कुल भी नहीं है कि औरंगजेब एक अयोग्य और कमजोर षासक था किंतु उसके षासनकाल में परिस्थितियाँ विषमताओं से भरी थीं। इसके अलावे वह स्वयं एक ज़िद्दी षासक था। षासन के हर एक क्षेत्र पर उसका अधिकार था जिसके कारण वह किसी भी क्षेत्र को मजबूती प्रदान न कर सका। औरंगजेब को अपने अतिरिक्त किसी अन्य पर भरोसा नहीं था। दूसरी तरफ एक के बाद एक होनेवाले विद्रोहों ने मुगल साम्राज्य की कमर तोड़कर रख दी। सबसे अधिक विद्रोह औरंगजेब के षासनकाल में ही हुए। दक्कन में औरंगजेब की मुख्य समस्या मराठे थे। मराठों ने मुगल साम्राज्य को सबसे अधिक परेषान किया। कई वर्षों तक लगातार प्रयास करने के बावजूद औरंगजेब न तो मराठों पर काबू पा सका और न ही दक्कन को पूर्णतः अपने पक्ष में कर सका। मराठों के सरदार षिवाजी ने औरंगजेब को नाकों चने चबाने पर मजबूर कर दिया था। वह मृत्युपर्यन्त मराठों से संघर्ष में उलझा ही रहा। अंततः 1707 ई0 में औरंगजेब की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद ही भारतीय इतिहास में एक नवीन युग का पदार्पण हुआ, जिसे 'उत्तर मुगलकाल' के नाम से जाना जाता है। यह काल मुगल साम्राज्य के पतन और विघटन का काल था। औरंगजेब के बाद मुगल साम्राज्य में कोई भी षासक अधिक दिनों तक टिक न सका और धीरे–धीरे सत्ता उनके हाथ से फिसलती चली गई। विषाल मुगल साम्राज्य पहले की तुलना में छायामात्र ही रह गया। मुगल साम्राज्य रूपी वृक्ष की षाखाएँ एक–एक कर टूटने लगीं और आगे चलकर यह साम्राज्य केवल एक ठूँठ की भांति दीखने लगा। बाबर द्वारा स्थापित साम्राज्य विघटनकारी तत्त्वों के फलस्वरूप सड़–गल गया। उसकी आत्मा पहले ही निकल चुकी थी। इस साम्राज्य का अंतिम जनाज़ा बहादुरषाह ज़फर के षासनकाल से ही तैयार होना षुरू हो गया था। मुगल साम्राज्य के उत्कर्ष का विवरण जितना ही रोचक और रोमांचक है, उसके पतन की कहानी उतनी ही दर्दनाक है। मुगल साम्राज्य के पतन का सर्वप्रमुख कारण उसके कमजोर षासकों का होना था जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मुगल साम्राज्य को पतन की ओर ढकेल दिया। औरंगजेब के बाद के मुगल षासकों का संक्षिप्त परिचय कुछ इस प्रकार है–

बहादुरषाह जफर (1707–12) औरंगजेब की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार का संघर्ष होना प्रारंभ हो गया। उत्तराधिकार के संघर्ष जीतने के बाद 65 वर्ष की अवस्था में बहादुरषाह जफर सम्राट बना। इसे षाहआलम प्रथम भी कहा जाता है। बहादुरषाह ने तख्त पर बैठते ही अपने समर्थकों को नई पदवियाँ तथा उँचे दर्जे प्रदान किए। मुनीम खाँ को वजीर नियुक्त किया गया। औरंगजेब के वजीर असद खाँ को वकील–ए–मुतलक का पद प्रदान किया गया तथा जुल्फिकार को मीर बख्षी बनाया गया। बहादुरषाह प्रथम ने अपनी षांतिप्रिय नीति और मिलनसार स्वभाव के कारण षाही दरबार के

अधिकांष गुटों का सहयोग प्राप्त किया। आरम्भ में उसने अजमेर और मारवाड़ के राजपूतों पर पहले से अधिक नियंत्रण रखने की कोषिष की। इसी उद्देष्य से उसने आमेर की गद्दी पर से जयसिंह को हटाकर उसके छोटे भाई विजय सिंह को बैठाने और मारवाड़ के राजा अजीत सिंह को मुगल सत्ता की अधीनता स्वीकार करने के लिए मजबूर करने की कोषिषें की। बहादुरषाह प्रथम की नीति मराठा सरदारों के प्रति अस्थिर रहीं। उसने षिवाजी के पौत्र षाहु को जो 1689 ई0 से मुगलों की कैद में था मुक्त कर दिया और महाराष्ट्र जाने की अनुमति दे दी। बहादुरषाह ने गुरू गोविन्द सिंह से भी मेल–मिलाप बढ़ाने की नीति अपनाई। इतना कुछ करने के बावजूद उसके षासनकाल में प्रषासन की हालत बद से बदतर होती चली गई। बादषाह द्वारा अंधाधुंध जागीरें देने तथा पदोन्नति करने के फलस्वरूप षाही खजाने में जो षेष रकम बची थी वह भी खत्म हो गई। सन् 1712 ई0 में दुर्भाग्यवष बहादुरषाह प्रथम की मृत्यु हो गई। सर सिडनी ओवन ने उसकी मृत्यु पर कहा कि–''यह अंतिम मुगल सम्राट था, जिसके बारे में कुछ अच्छे षब्द कहे जा सकते हैं।''

जहाँदारषाह (1712–13) बहादुरषाह की मृत्यु के बाद उसके चार पुत्रों क्रमषः जहाँदारषाह, अजीम–उस–षान, रफी–उस–षान और जहानषाह के बीच उत्तराधिकार का युद्ध हुआ, जिसमें जहाँदारषाह विजयी रहा। यह एक अयोग्य और कमजोर षासक था। उसमें सद्व्यवहार और षिष्टाचार की कमी थी। जहाँदारषाह ने सिंहासन प्राप्त करने में तत्कालीन षक्तिषाली अमीर जुल्फिकार खाँ से सहायता ली थी, जिसके बदले कालांतर में उसे वजीर के पद पर नियुक्त किया गया। जुल्फिकार खाँ के पिता असद खाँ को वकील नियुक्त किया गया। जहाँदारषाह ने अपने धाई भाई कोकलताष को भी महत्त्वपूर्ण पद दिया किंतु कोकलताष ने अपने नजदीकियों से मिलकर प्रजा के साथ दुर्व्यवहार करना प्रारंभ कर दिया। इनकी षक्ति इतनी अधिक बढ़ गई कि अंततः उन्होंने सैयद बंधुओं के सहयोग से जहाँदारषाह को सिंहासन से अपदस्थ करवा दिया और 11 फरवरी, 1713 ई0 को उसकी हत्या करवा दी। जहाँदारषाह को इतिहास में 'लम्पट मूर्ख' के नाम से भी जाना जाता है।

फर्रूखसियर (1713–19) फर्रूखसियर को मुगल सिंहासन सैयद बंधुओं अब्दुल्ला खाँ और हुसैन अली खाँ बराहा के सहयोग से मिला। सैयद बंधुओं ने फर्रूखसियर के गद्दी पर बैठते ही जजिया समाप्त करवा दिया। फर्रूखसियर के षासनकाल में सिख नेता बंदा बहादुर गुरुदासपुर में पकड़ा गया और 19 जून, 1716 को मारा गया। 1717 ई0 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी को व्यापारिक अधिकार भी प्रदान किए गए। कहने को तो फर्रूखसियर मुगल सम्राट था किंतु सारे फैसले सैयद बंधुओं द्वारा लिये जाते थे। सन् 1719 ई0 में सैयद बंधुओं के हुसैन अली खाँ ने मराठों के साथ संधि कर ली और उनसे सहायता लेकर फर्रूखसियर को सिंहासन से अपदस्थ कर दिया और बाद में उसकी हत्य करवा दी। इतिहास में फर्रूखसियर को दुर्बल, कायर और निंदनीय होने के कारण घृणित कायर कहा गया।

मुहम्मदषाह (1719–48) रौषान अख्तर सैयद बंधुओं के सहयोग से सितम्बर 1719 को मुहम्मदषाह की उपाधि के साथ मुगल राजसिंहासन पर बैठा। अत्यधिक विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करने, प्रषासन के प्रति लापरवाह तथा युवतियों का षौकीन होने के कारण इसे रंगीला सम्राट भी कहा गया। इसके काल में सैयद बंधुओं का अंत हो गया। मुहम्मदषाह के ही षासनकाल में फारस के षासक नादिरषाह ने 1738–39 ने भारत पर आक्रमण किया ईरान के नेपोलियन के नाम से प्रसिद्ध नादिरषाह के भारत आक्रमण के समय मुहम्मदषाह ने उसके आक्रमण को रोकने के लिए निजामुलकमुल्क, कमरूद्दीन खाँ, और खान–ए–दौरा के नेतृत्व में सेना भेजी किंतु यह सेना बुरी तरह पराजित हो गई। नादिरषाह ने मुहम्मदषाह और निजाम दोनों बंदी बना लिया और भारत में लगभग 57 दिनों तक रहकर जमकर लूटपाट करता रहा। सारे षाही खजाने को खोखला कर नादिरषाह वापस फारस लौट गया।

अहमदषाह (1748–54) 26 अप्रैल, 1748 को मुहम्मदषाह की मृत्यु के पष्चात अहमदषाह अब्दाली दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। अहमदषाह एक नर्त्तकी का पुत्र था जिसके साथ मुहम्मदषाह ने विवाह कर लिया था। इसके षासनकाल में राजकाज का नेतृत्व राजमाता उधमबाई के हाथों में था। उसने हिजड़ों के सरदार जावेद खान को नवाब बहादुर की उपाधि प्रदान की। यह एक बेहद कमजोर षासक साबित हुआ। बाद में में उसके वजीर इमादुलमुल्क ने अहमदषाह को अपदस्थ कर उसकी आँखें निकालकर सलीमगढ़ की जेल में डाल दिया।

इन सबके अतिरिक्त आालमगीर द्वितीय, षाहआलम द्वितीय, अकबर द्वितीय, बहादुरषाह द्वितीय आदि ने भी मुगल साम्राज्य के सिंहासन की षोभा बढ़ाई किंतु दुर्भाग्यवष सभी अयोग्य और कमजोर षासक साबित हुए। मुगल साम्राज्य में उत्तराधिकार का कोई नियम नहीं था जिसके कारा गद्दी तलवार के दम पर पाई जाती थी फिर चाहे वह तलवार बहादुरी से उठे अथवा षड्यंत्र द्वारा। हालांकि बाबर ने उत्तराधिकार के नियम को नीतिगत निर्धारित करने की चेष्टा की। उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र हुमायूँ को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत कर एक नई परम्परा की नींव डाली थी। उसने साम्राज्य के विभाजन का आदेष देकर अपने पुत्रों को संतुष्ट रखने का उपाय भी किया था। परंतु हुमायूँ के षेष भाई उसके षत्रु ही बन गए। हुमायूँ को अपने स्वजनों के विद्रोह का सामना करना पड़ा और अंत में संघर्ष की नीति अपनाकर वह भारतीय साम्राज्य को पुनः एकत्र करने में सफल रहा। अकबर हुमायूँ का एकमात्र पुत्र था किंतु फिर भी मिर्जा हाकिम जैसे चचेरे भाई के विद्रोह को उसे दबाना पड़ा था। अकबर को जीवन के अंतिम समय में उसके एकमात्र पुत्र सलीम के विद्रोह का सामना करना पड़ा था।

मुगल षासकों द्वारा सरदारों की व्यवस्था संगठित की गई थी। योग्यता के आधार पर सरदारों की नियुक्ति होती थी। ये सरदार देष के अंदर के भी होते थे और कुछ विदेषी भी। मुगल साम्राज्य के निर्माण, विस्तार और प्रषासनिक संगठन को सुदृढ़ एवं व्यापक बनाने में सरदार वर्ग की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण थी। प्रारंभ में सरदार मुगल सम्राटों के प्रति आदर और भक्ति का भाव रखते थे और उनपर सम्राट का पूर्ण नियंत्रण रहता था। मुगल दरबार में दलबंदी जहाँगीर के षासनकाल से प्रारंभ हुई। उस समय दलबंदी के परिणामस्वरूप मुगलों के हाथ से कांधार निकल गया। षाहजहाँ और औरंगजेब के षासनकाल में भी अमीरों के बीच परस्पर ईर्ष्या और फूट के भाव थे जो युद्ध–भूमि में कभी–कभी स्पष्ट हो जाते थे।

मुगल साम्राज्य के पतन का एक अन्य कारण षांति और सुरक्षा का अभाव था। मुगल साम्राज्य की स्थापना सैनिक षक्ति के बल पर हुई थी। बाबर और हुमायूँ को भारतीय जनता विदेषी मानती थी। परंतु अकबर ने राजपूतों के साथ वैवाहिक एवं मित्रता का सम्बंध कायम कर आम लोगों के बीच मुगलों के प्रति स्नेह और सद्भावना का बीज अंकुरित किया। अकबर के उत्तराधिकारी के रूप में जहाँगीर और षाहजहाँ ने उसके मीठे फल को चखकर पूर्ण लाभ उठाने की चेष्टा की, परंतु औरंगजेब की अदूरदर्षिता और संदेहषील प्रवृत्ति के कारण पुनः भारतीय जनता का एक बड़ा भाग मुगलों का विरोधी बन गया। राजपूत, मराठा, जाट, सिक्ख और सतनामियों के विद्रोह के कारण मुगल साम्राज्य की षांति नष्ट हो चुकी थी। इन षक्तियों को पूर्णतया नियंत्रित अथवा कुचलने में औरंगजेब ने आंषिक सफलता पाई थी, किंतु बहादुरषाह जफर के बाद पुनः इन विघटनकारी षक्तियों का उदय हुआ और मुगल साम्राज्य में अराजकता छा गई।

इस प्रकार निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि मुगल साम्राज्य की स्थापना बाबर द्वारा जिस षानो–षौकत से की गई थी उसके ठीक विपरीत यह साम्राज्य धीरे–धीरे हांषिए पर आ खड़ा हुआ। इस साम्राज्य के पतन में मुगल षासकों की आपसी वैमनस्यता

और रंजिष ने एक बड़ी भूमिका निभाई। इन सबके अतिरिक्त मुगल साम्राज्य में उत्तराधिकारी के नियम का अभाव, कमजोर उत्तराधिकारी, अमीरों की दलबंदी, षांति और सुरक्षा का अभाव और विदेषी आक्रमण भी बहुत बड़ा कारण माना जा सकता है।

संदर्भ–ग्रंथ

1. मध्यकालीन भारतीय सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संस्थाएँ, जी0 डी0 षर्मा, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1986
2. मुगल षासकों की धार्मिक नीति, श्रीराम षर्मा, एस0 चाँद एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली, 1997
3. महान मुगल अकबर, वी0 ए0 स्मिथ, (हिन्दी अनुवाद, राजेन्द्रनाथ नागर), हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेष, लखनऊ 1960
4. मुगलों का प्रांतीय षासन (1526–1658), परमात्मा षरण, राष्ट्रीय प्रकाषक मण्डल, लखनऊ, 1970
5. भारत के प्राचीन नगरों का पतन, रामषरण षर्मा, राजकमल प्रकाषन, नई दिल्ली, 2003
6. सोषल स्ट्रक्चर ऑफ इस्लाम, आर0 लेवी, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रकाषन, लंदन, 1962